संपादकीय

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ की शिक्षित, योग्य, कुशल एवं उद्यमी जनसंख्या पर निर्भर करती है। ऐसे में जनसंख्या संबंधी वैश्विक एवं स्थानीय चुनौतियों तथा समस्याओं के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करना आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु विश्व भर में प्रत्येक वर्ष 11 जुलाई को 'विश्व जनसंख्या दिवस' मनाया जाता है। विश्व समुदाय द्वारा इस दिवस के माध्यम से मानव समाज में जनसंख्या, गरीबी उन्मूलन, रूढ़िवादी परंपराओं एवं मान्यताओं से जुड़े मिथकों के प्रति ज्ञान एवं जागरूकता, मातृत्व एवं बाल सुरक्षा, जेंडर समानता, बालिका शिक्षा जैसे अनेक मुद्दों पर विभिन्न शैक्षिक, स्वास्थ्य, आर्थिक एवं सामाजिक संस्थानों व संगठनों द्वारा संगोष्ठी, सम्मेलन एवं परिचर्चाएँ आयोजित की जाती हैं। इन सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप प्राप्त सार्थक समाधानों का संप्रेषण भी सार्थक ढंग से होना आवश्यक है। इस प्रकार के संप्रेषण का एक माध्यम पत्रिकाएँ भी होती हैं, *भारतीय आधुनिक शिक्षा* का यह अंक भी संप्रेषण का एक माध्यम है।

पत्रिका के इस अंक की शुरुआत शोध पत्र '*बरखा*' क्रमिक पुस्तकमाला और बच्चों का पठन-निष्पादन — सीखने के प्रतिफल के संदर्भ में' से की गई है। यह शोध पत्र राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा कक्षा 1 व 2 के बच्चों में पठन कौशल विकसित करने के लिए विकसित की गई '*बरखा*' क्रमिक पुस्तकमाला पर आधारित है, जबकि वहीं लेख 'समीक्षात्मक सोच क्यों?' में बताया गया है कि व्यक्ति की स्वयं की सोच ही उसका भविष्य बनाती है और उसे दिशा दिखाती है। अपने विद्यार्थियों और समाज की सोच को समीक्षात्मक सोच बनाने में एक शिक्षक की क्या भूमिका हो सकती है? यह लेख इन्हीं सब प्रश्नों के संभावित उत्तरों पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। वहीं, लेख 'विद्यालयी शिक्षा में बच्चों का खेल-खेल में मूल्य संवर्धन कैसे हो?' में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्य संवर्द्धन में माता-पिता, अभिभावकों, शिक्षकों, परिवार, सामाजिक वातावरण एवं विद्यालयी परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका एवं प्रभाव पर विमर्श किया गया है। साथ ही खेल, कहानी, नाटक आदि अन्य क्रियाकलापों एवं गतिविधियों का वर्णन भी किया गया है, जिसके माध्यम से बच्चों में मूल्य समावेशन किया जा सके। विद्यालयों में सुदृढ़ प्रशासन एवं प्रबंधन तंत्र के सफल संचालन की ज़िम्मेदारी प्रधानाचार्य की होती है। अतः शोध पत्र 'विद्यालय के प्रशासन एवं प्रबंधन में प्रधानाचार्य की भूमिका' का केंद्रीय सरोकार स्ववित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में दैनंदिन विद्यालयी क्रियाकलाप एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य में प्रधानाचार्य की विभिन्न भूमिकाओं का विवरणात्मक संदर्भ प्रस्तुत करना है। इसी प्रकार शोध पत्र 'शिक्षक विमुखता एवं प्राचार्य का नेतृत्व व्यवहार' में पाया गया कि प्राचार्य का उच्च वांछनीय नेतृत्व व्यवहार शिक्षकों में कम विमुखता उत्पन्न करता है, जबकि निम्न वांछनीय नेतृत्व व्यवहार, शिक्षकों में अधिक विमुखता उत्पन्न करता है।

शोध पत्र 'विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन' में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित कक्षा 7 की विज्ञान विषय की

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। वहीं लेख 'पाठ्यपुस्तक को कक्षा में कैसे उपयोग किया जाए?' में यह बताने का प्रयास किया गया है कि कक्षा 6 में सामाजिक विज्ञान विषय की एक पाठ्यपुस्तक *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-1* को कक्षा में कैसे उपयोग किया जाए। शोध पत्र 'गणितीय संप्रत्ययों की समझ और संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान' में, विद्यार्थियों में गणितीय संप्रत्ययों की समझ का विकास करने में संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान एवं पारंपरिक विधि का तुलनात्मक अध्ययन कर, परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं।

लेख 'शोध का प्रथम चरण — एक गुणात्मक शोध प्रस्ताव' में बताया गया है कि प्रायः शोधार्थियों द्वारा शोध प्रस्ताव विकसित करते समय कई प्रकार की गलतियाँ की जाती हैं, जिस कारण उन्हें भविष्य में शोध अध्ययन करते समय कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अतः इस लेख में शोधार्थियों के लिए एक विशिष्ट, व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से शोध प्रस्ताव विकसित करने का वर्णन किया गया है। वहीं, शोध पत्र 'परास्नातक स्तर के लघु शोध-प्रबंधों में ग्रंथ सूची की गुणवत्ता' में बताया गया है कि ग्रंथ सूची शोध का एक महत्वपूर्ण आयाम है जिससे शोध की गुणवत्ता को परखा जाता है।

'सामाजिक विज्ञान का शिक्षण-अधिगम एवं स्थापित संज्ञान (Situated Cognition)' नामक शोध पत्र, सामाजिक विज्ञान के शिक्षण-अधिगम को स्थापित संज्ञान के सापेक्ष समझाने का प्रयास करता है। जिसके लिए कक्षा 9 के सामाजिक विज्ञान विषय की कक्षाओं का अवलोकन एवं विश्लेषण किया गया है तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर सामाजिक विज्ञान के शिक्षण-अधिगम हेतु कुछ उपयुक्त सुझाव दिए गए हैं। वहीं, शोध पत्र 'ग्रामीण शिक्षित वयस्कों का जाति एवं जेंडर के मुद्दों पर मत' में यह बताने का प्रयास किया गया है कि गाँव में शिक्षा प्राप्त वयस्क महिला और पुरुष, जाति एवं जेंडर को लेकर किस प्रकार की सोच रखते हैं? या उनके कार्य व्यवहार में जाति एवं जेंडर की क्या भूमिका होती है? इस अंक के अंत में शोध पत्र 'विद्यालय नेतृत्व और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के विस्तारित संपर्क कार्यक्रम का मूल्यांकन' दिया गया है। यह इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) द्वारा दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत संचालित एक कार्यक्रम है। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि विद्यालय नेतृत्व और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.एस.एल.एम.) के विस्तारित संपर्क कार्यक्रम (ई.सी.पी.) को अधिकांश प्रतिभागियों ने विभिन्न अपेक्षित क्षमताओं, कौशलों तथा मूल्यों के विकास के लिए बहुत उपयोगी माना।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा? साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास (Best Practices), पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, क्षेत्र अनुभव (Field Experiences) आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

© NCERT not to be republished